6

मुख्य वचन: मत्ती 26:17-30

प्रभु-भोज की मूल चीज़ें

कई बार प्रभु भोज में इस्तेमाल की जाने वाली रोटी और दाखरस पर सवाल उठते हैं। प्रभु की मेज़ पर क्या होना चाहिए?

रोटी

जब यीशु ने प्रभु भोज की स्थापना की जब उसने फसह की रोटी इस्तेमाल की। कानून बिल्कुल साफ था कि फसह में और दूसरे मौकों पर अखमीरी रोटी ही इस्तेमाल की जानी चाहिए थी। हम बाइबल के स्रोत और बाइबल के अलावा दूसरे स्रोतों से भी रोटी के बारे में देख सकते हैं।

फलस्तीन में रोटी ज्यादातर गेहूं से ही बनाई जाती थी। याजक को समर्पित करने के लिए इसका अखमीरी होना जरूरी था (निर्गमन 29:1, 2)। दूसरे उद्देश्य के लिए जो अनाज इस्तेमाल किया जाता था वो जौं (गिनती 5:15) और बाजरा (यहेजकेल 4:9) था। दानों को पत्थर की चक्की में डाल दिया जाता था या किसी अनाज की मिल पर पिसवाया जाता था, जहां चक्की के पाट को ज्यादातर जानवरों द्वारा चलाया जाता था।

आटा गूंधने वाले बरतन का इस्तेमाल मिस्रियों (निर्गमन 8:3) और इस्राएलियों द्वारा किया जाता था, जब उन्होंने मिस्र को छोड़ा (निर्गमन 12:34) तब रोज़ के लिए आम रोटी बनाने से एक दिन पहले आटा, पानी और खमीर को एक साथ एक बर्तन में मिलाकर गूंधा जाता था। गूंधे हुए आटे को पतली गोल रोटियों का आकार दिया जाता था। जब रोटियां खमीर के कारण फूल जाती थी तब उन्हें पकाया जाता था। फसह की रोटी के साथ ऐसा नहीं हुआ था। क्योंकि इस्राएलियों ने मिस्र को बहुत जल्दी में छोड़ा था और उनके पास इतना समय नहीं था कि रोटियों को खमीर के कारण फूलने का इंतजार करते। इस कारण फसह की रोटी खमीर के बिना बनाई गई।

पुराने नियम के समय में रोटी तीन तरीकों से बनाई जाती थी।

- पत्थरों के आसपास आग जलाकर उन्हें गरम किया जाता था। जब पत्थर गर्म हो जाते तो उनमें से अंगार लेकर उन पर रोटियां पकाई जाती थीं।
- आटे को पकाने वाले बर्तन में रखा जाता, जो मिट्टी या धातु का होता था। इसे आग पर रखा जाता ताकि रोटी बन जाए।
- जमीन को खोद कर या पत्थरों से ज़मीन के ऊपर एक तंदूर बनाया जाता। एक बर्तन में गूंथा आटा डालकर उसे इस तंदूर में पकने के लिए रख दिया जाता था।

फसह की रोटी जो मैसोट कहलाती है, बिना खमीर के आटे से बनाई जाती थी। मूसा के द्वारा परमेश्वर ने फसह की रोटी के बारे में कुछ विशेष निर्देश दिए थे।

> ''सात दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना, उन में से पहिले ही दिन अपने-अपने घर में से खमीर उठा डालना, वरन जो पहिले दिन से लेकर सातवें दिन तक कोई खमीरी वस्तु खाए, वह प्राणी इस्राएलियों में से नाश किया जाए'' (निर्गमन 12:15)।

> ''सात दिन तक तुम्हारे घरों में कुछ भी खमीर न रहे'' (निर्गमन 12:19क)।

> ''इन सातों दिनों में अखमीरी रोटी खाई जाए; वरन तुम्हारे देश भर में न खमीरी रोटी, न खमीर तुम्हारे पास देखने में आए'' (निर्गमन 13:7)।

> ''सात दिन तक तेरे सारे देश में तेरे पास कहीं खमीर देखने में भी न आए'' (व्यवस्थाविवरण 16:4क)।

इस्रालियों ने मिस्र को छोड़ते समय वैसा ही किया, जैसी उन्हें परमेश्वर से आज्ञा मिली थी, ''और वह दिन तुम को स्मरण दिलाने वाला ठहरेगा, और तुम उसको यहोवा के लिये पर्ब्ब करके मानना; वह दिन तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि जानकर पर्ब्ब माना जाए'' (निर्गमन 12:34)। लाल समुद्र को पार करने के बाद सुकोत में पहुंचकर उन्होंने अपनी अखमीरी रोटियां पकाईं।

> और जो गून्धा आटा वे मिस्र से साथ ले गए उसकी उन्हों ने बिना खमीर दिए रोटियां बनाईं; क्योंकि वे मिस्र से ऐसे बरबस निकाले गए, कि उन्हें अवसर भी न मिला कि मार्ग में खाने के लिये कुछ पका सकें, इसी कारण वह गून्धा हुआ आटा बिना खमीर का था (निर्गमन 12:39)।

परमेश्वर ने उन्हें यह भी साफ किया कि अनाज की भेंट चढ़ाते समय उसमें क्या क्या इस्तेमाल करना आवश्यक है।

> और जब कोई यहोवा के लिये अन्नबलि का चढ़ावा चढ़ाना चाहे, तो वह मैदा चढ़ाए; और उस पर तेल डालकर उसके ऊपर लोबान रखे (लैव्यव्यवस्था 2:1)।

अगर अनाज की रोटियां बनाई जाएं तो ''तेल से सने हुए अखमीरी मैदे की हो'' (लैव्यव्यवस्था 2:5, देखें आयत 7; निर्गमन 29:40) मधु के बिना (लैव्यव्यवस्था 2:11)।

याजक को समर्पित करने के लिए रोटियां गेहूं के आटे को तेल डालकर बिना अखमीर के बनाई जाए (निर्गमन 29:1, 2, 23)। फसह की रोटी में इस्तेमाल की जाने वाली चीज़ों के बारे में कुछ नहीं कहा गया, सिवाय इसके कि यह खमीर के बिना हो।

प्रभु-भोज में खमीरी रोटी के इस्तेमाल के बारे में आपका क्या विचार है? अगर हम किसी तरह के जूस का इस्तेमाल न करें, सिवाय अंगूर रस का-जो इस शब्द ''दाखरस'' का अर्थ है और इसी पेय पदार्थ का इस्तेमाल यीशु ने भी किया था-फिर हम किसी और रोटी का इस्तेमाल क्यों करें, सिवाय अखमीरी रोटी के, जिसका इस्तेमाल उसने भी किया था।

हम जानते हैं कि यीशु ने अखमीरी रोटी और दाखरस का इस्तेमाल किया तो हमारे लिए

भी यह जरूरी है कि हम अखमीरी रोटी और दाखरस का इस्तेमाल करें। हम वैसी ही रोटी और दाखरस, जो उसने इस्तेमाल का इस्तेमाल करके सुरक्षित क्यों नहीं हो जाते?

दाखरस का रस

''दाख का रस'' क्या है, जिसका इस्तेमाल यीशु ने किया? क्या अंगूर का रस ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए? क्या वाइन का इस्तेमाल स्वीकार्य है? क्या इसे पानी में इस्तेमाल किया जाना चाहिए? क्या अंगूर के स्वाद वाला या कोला जैसा कोई पेय पदार्थ ठीक रहेगा? क्या अंगर सेब और किसी अन्य फलों का मिक्स जूस ठीक रहेगा?

फलस्तीन में सबसे ज्यादा उगने वाला फल अंगूर ही था। जो बेलों पर लगता था और इन अंगूरों से रस निचोड़कर निकाला जाता था, इसी कारण ''दाख का रस'' शब्द का इस्तेमाल होता है। खमीर के साथ या खमीर के बिना। यह सोचना एक गलत धारणा है कि इससे सिर्फ वाइन ही नहीं बनती है।[1] ऐम्पिलॉस शब्द का अर्थ है ''रस, अंगूर का रस।''[2] यूनानी में जिस फल में वाइन होती है, उसे दाखरस ही समझा जाता है (प्रकाशितवाक्य 14:18)। ''दाख का रस'' अंगूर का रस ही है।

पुराने नियम में मेम्ने और अखमीरी रोटी के खाने के बारे में तो स्पष्ट बताया गया परन्तु खाने के दौरान क्या पीना है, इसका खुलासा नहीं किया गया। आमतौर पर यह कल्पना की जाती है कि यीशु के समय फसह भोज के चार कटोरों में, दाख का रस ही था।

यदि प्रभु भोज की स्थापना (त्तती 26:28, 29) करते समय यीशु का संकेत ''वाइन'' की तरफ होता तो वह ''*ओंइनोस*'' शब्द का इस्तेमाल करता। यह ''दाखरस'' के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द था, जैसा कि इफिसियों 5:18 में कहा गया है: ''दाखरस से मतवाले न बनो, इससे लुचपन होता है।'' दाखरस शब्द यह संकेत नहीं देता कि यह दाख के रस में खमीर का इस्तेमाल किया गया या नहीं। शराबियों की आजमाइश के कारण और उन लोगों की सोच के कारण, जो शराब पीने के खिलाफ हैं, सबसे अच्छा तरीका है हम खमीर के बिना दाखरस का इस्तेमाल करें।

''दाखरस'' अंगूर के रस से बना पेय पदार्थ है, इसलिए कोई भी और जूस या पेय पदार्थ का इस्तेमाल पभ भोज में नहीं किया जाना चाहिए। जब यीशु ने प्याला लिया, उसने कहा ''यही किया करो'' तात्पर्य है कि अंगूर का रस लिया करो ''मेरी यादगारी में'' (कुरिन्थियों 11:25; देखें मत्ती 26:28, 29)। उसके पास प्याले में सिर्फ अंगूर का रस ही था। जो लोग इससे ज्यादा या कम करते हैं वो ''यही'' नहीं कर रहे, जैसा यीशु ने किया।

प्रभु भोज में निम्न बातों को नहीं करना चाहिए:

- यीशु ने जिस पेय पदार्थ का इस्तेमाल किया उसकी जगह अंगूर वाला सोडा, कोई और जूस या किसी और पेय पदार्थ का इस्तेमाल करना।
- अंगूर के रस में किसी और रस को मिलाना।
- सिर्फ रोटी खाना, जबकि मेज़ पर कार्य करने वालों का ही दाख का रस पीना।

सारांश

प्रभु भोज में अखमीरी रोटी और दाखरस का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। कलीसिया के हर एक आज्ञाकारी सदस्य को प्रभु-भोज में हिस्सा लेना चाहिए। सुरक्षित तरीका है कि हम वही इस्तेमाल करें, जिसका इस्तेमाल यीशु ने किया। इनके बदले में किसी दूसरी चीज़ का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

टिप्पणियां

[1]डेविड जी. बुर्क, ''फ्रूट,'' द *न्यू इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल* इन्साइक्लोपीडिया, सम्पा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 2:365. [2]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा. संस्क., संशो. एवं सम्पा. फ्रेडरिक डब्ल्यू. डेंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 2000), 54.